मोहन की झाँकी में झाँको...

कहते हैं कि श्रीकृष्ण सोलह कलाओं से सम्पूर्ण थे। अब सोलह कला का यहां अर्थ यह है कि जिसके अंदर सौ प्रतिशत पवित्रता हो, अर्थात् जिसके एक गुण को यदि सोलह प्रकार से व्याख्या की जाए, फिर भी कोई नुक्स ना निकाला जा सके, वो है सोलह कला। आज भी सबके अंदर कलाएं हैं, लेकिन उन कलाओं के साथ पवित्रता नहीं है। उन्हें खरीदा व बेचा जाता है। जब कोई तुलना करता है तो कहता है कि अगर कला थी तो श्रीकृष्ण के अंदर। इतिहास को यदि देखें तो हम पायेंगे कि कोई भी ऐसा व्यक्तित्व नहीं होगा जिसको हम सोलह कला सम्पूर्ण कहते हों। कहते थे श्रीकृष्ण के अंदर सम्पूर्ण आरोग्यता, सुंदरता, आत्मिक बल और पवित्रता आदि भरपूर मात्रा में थी। अन्य कोई भी व्यक्ति शारीरिक, आत्मिक दोनों दृष्टिकोणों से इतना सुंदर, आकर्षक, प्रभावशाली और

प्रभुत्वशाली नहीं हुआ।

इतने महान कैसे बने?

लोगों में एक छंद भी प्रसिद्ध है, जिसका अर्थ है कि हे राधे! तुमने कौन सा ऐसा पुरुषार्थ किया था कि वैकुण्ठ नाथ श्रीकृष्ण तुम्हारे अधीन हो गए। तो जो बात राधे के बारे में प्रचलित है वही कृष्ण के बारे में भी तो पूछी जा सकती है। श्रीकृष्ण को योगेश्वर के नाम से भी हम जानते हैं। अब इसका अर्थ तो यही हुआ कि वो भी ईश्वर के साथ बैठकर योगाभ्यास किया करते थे, तभी तो उनका नाम योगेश्वर है। श्रीकृष्ण के जीवन में तो किसी भी गुण व शक्ति आदि की कमी नहीं थी जिसकी प्राप्ति के लिए वे योगाभ्यास करते, लेकिन हाँ पूर्व जन्म में वे ऐसा अभ्यास अवश्य कर सकते हैं। हो सकता है कि यह बात आम इंसान के गले से ना उतरे कि वो तो स्वयं परमात्मा हैं, उन्हें योग की क्या आवश्यकता है। परंतु आप ही तो कहते हो `लॉर्ड कृष्णा', `लॉर्ड रामा' अर्थात् राम और कृष्ण दिव्य गुणधारी मनुष्य थे और इस मनुष्यता से निकल देवता बनने हेतु अवश्य पुरुषार्थ किया होगा, तभी उन्हें ऐसा कहा जाने लगा कि वो तो भगवान हैं। यह स्वाभाविक है क्योंकि परमात्मा के सभी गुण और सभी शक्तियां आप कृष्ण के अंदर देख सकते हैं।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

> दुनिया में तो बहुत आदर्श पैदा हुए, महान विभूतियां पैदा हुईं, परंतु इन सभी महान विभूतियों के पीछे का इतिहास बहुत ही रोचक रहा है, आश्चर्यचकित करने वाला रहा है। विभूतियों ने इस समाज को वो दिया जो एक आम इंसान सपने में भी नहीं सोच सकता। ऐसा आकर्षणमय व्यक्तित्व जिसे दुनिया आज भी पालने में बड़े प्यार से झुलाती है, उसे प्यार करती है, पुचकारती है तो कोई साधारण व्यक्तित्व तो नहीं रहा होगा ना कृष्ण!

कृष्ण के जीवन में झांको

सबसे पहले कृष्ण जन्माष्टमी में अगर कोई आकर्षण का मुख्य केन्द्र होता है तो वो है कृष्ण की विभिन्न बाल लीलाओं का दृश्य जिसे झाँकी कहते हैं। अब उनकी बाल लीला ही क्यों

- शेष पेज 11 पर

7 कदम राजयोग की ओर...

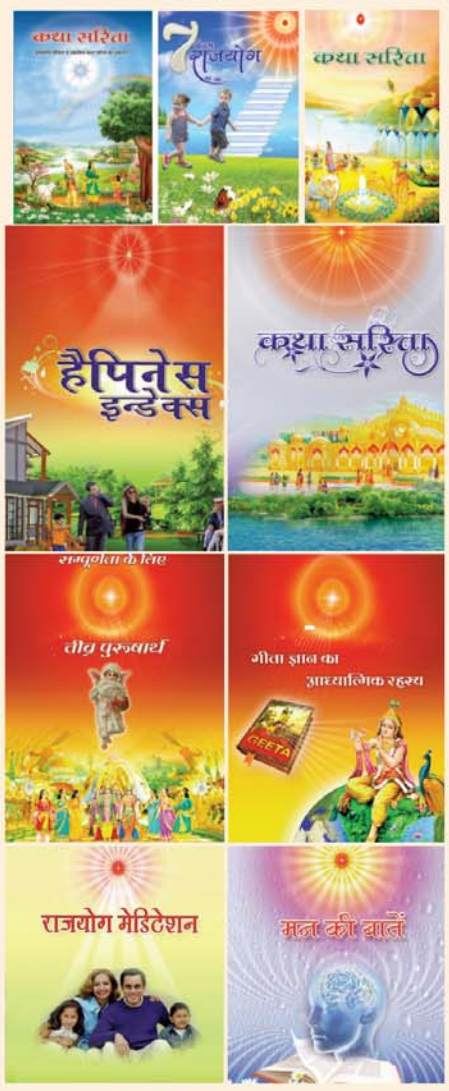

प्रश्न: श्रीकृष्ण जी के बारे में ये जो मान्यतायें प्रचलित हैं कि उनका जन्म जेल में हुआ और जन्म के समय फूलों की बरसात हुई, जेल के ताले खुल गए और बचपन में ही उन्होंने अनेक असुरों का संहार किया, इनमें से कुछ बातें बड़ी काल्पनिक सी लगती हैं, क्या आप इन बातों से सहमत हैं?

उत्तर: सत्य तो यह है कि श्रीकृष्ण के बारे में पुराणों आदि में जो कुछ भी लिखा है, उनसे सभी विद्वान आदि भी सहमत नहीं हैं। किसी भी महापुरुष के चरित्र के साथ बाद में अनेक बातें जुड़ जाया करती हैं, फिर श्रीकृष्ण जी तो इस सृष्टि के महानायक हैं। उनके बारे में कई लेखकों ने कुछ ऐसी-वैसी बातें भी जोड़ दी हैं, जो हुबहू वैसी नहीं हैं। असुरों आदि के विनाश की जो बातें लिखी हैं, ये वास्तव में आसुरी वृत्तियों के विनाश की बात है।

श्रीकृष्ण जिनकी भक्ति में बहुत पूजा हो रही है, वो तो सतयुग के सर्वश्रेष्ठ देवता थे, जो कि बाद में चलकर श्रीनारायण के रूप में सिंहासन पर बैठे, वे सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण अहिंसक और सर्व शक्तियों से सम्पन्न थे। उनके काल में असुर होते ही नहीं। ऐसा लगता है कि द्वापर के अंत में इसी नाम से कोई अति शक्तिशाली और दिव्य पुरुष यहां पर थे, उन दोनों के चरित्र को मिला दिया गया है। क्योंकि सतयुग में किसी के संहार की ज़रूरत नहीं होती, अपितु द्वापर के अंत में कुछ आसुरी शक्तियां प्रबल हो जाती हैं।

श्रीकृष्ण जब सतयुग के आदि में इस धरा पर अवतरित हुए तो प्रकृति ने उनका स्वागत किया और फूलों आदि की बरसात हुई, परन्तु उनका जन्म जेल में नहीं, सोने के महल में हुआ था। जो कंस आदि के वध की और उनके माता-पिता को जेल में रखने की कहानियां हैं, ऐसा लगता है कि इनके पीछे कुछ आध्यात्मिक रहस्य हैं।

प्रश्न: भक्त श्रीकृष्ण को ईश्वर का ही रूप मानते हैं। उनकी सभी कहानियों से ये भी स्पष्ट होता है कि उनके पास अनंत शक्तियां थीं, क्या आप भी उन्हें भगवान मानते हैं?

उत्तर: ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में जो ज्ञान दिया जाता है वो स्वयं ज्ञान सागर निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा दिया, वो ही ज्ञान सम्पूर्ण सत्य है और मनुष्य को पतित से पावन बनाने वाला है। ज्ञान देते हुए उन्होंने बताया कि किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता, जबकि श्रीकृष्ण को तो अपना देह है। उन्होंने जन्म भी लिया और देह भी छोड़ा, जबकि परमात्मा तो जन्म मरण से न्यारे हैं। इसलिए श्रीकृष्ण भगवान नहीं परंतु भगवान के समान अवश्य हैं, नेक्स्ट टू गॉड हैं।

जब कोई भी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बन जाती है तो वह बहुत शक्तिशाली हो जाती है। यही रहस्य है श्रीकृष्ण के शक्तिशाली होने का, लेकिन उनकी अलौकिक शक्ति मनुष्यों के संहार के लिए नहीं बल्कि दुर्गुणों और आसुरी शक्तियों के संहार के लिए होती है।

प्रश्न: कहीं-कहीं शास्त्रों में ऐसा भी सुनने में आता है कि श्रीकृष्ण ने अपने पूर्व जन्म में गहन तपस्या की थी, कुछ लोग ये भी मानते हैं कि श्रीकृष्ण के तन में परमात्मा ने प्रवेश करके ही गीता ज्ञान दिया था। क्या ये सत्य बातें हैं?

उत्तर: सृष्टि चक्र का रहस्य खोलते हुए त्रिलोकी नाथ परमात्मा ने स्पष्ट किया कि श्रीकृष्ण का जन्म तो सृष्टि के आदि में हुआ था, और वही आत्मा जन्म लेते-लेते अनेक पार्ट प्ले करते-करते जब कलियुग के अंत में पहुंची तो उनके ही तन में परमात्मा ने प्रवेश करके सत्य गीता ज्ञान दिया, क्योंकि वही सृष्टि की सबसे महान आत्मा है और उनका ही उन्होंने नाम रखा प्रजापिता ब्रह्मा। अर्थात् जो श्रीकृष्ण थे वे सृष्टि के आदि में थे और कलियुग के अंत में वे ही बने प्रजापिता ब्रह्मा। तो प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा ने ज्ञान दिया, ना कि श्रीकृष्ण के तन में प्रवेश करके, क्योंकि सतयुग में तो धर्म अपने सतोप्रधान स्वरूप में था। वहां सभी देवात्मायें ज्ञान स्वरूप में स्थित थीं, वहां किसी को भी ज्ञान सुनने की आवश्यकता ही नहीं थी।

श्रीकृष्ण के अंतिम जन्म में जब वे प्रजापिता ब्रह्मा थे, उन्होंने ही निराकार परमात्मा से सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया और राजयोग की गहन तपस्या की। इस गहन तपस्या के बल से वे पुनः मायाजीत बनकर जगतजीत बने। इसीलिए कहीं-कहीं ये लिख दिया गया है कि श्रीकृष्ण ने पूर्व जन्म में गहन तपस्या की थी।

प्रश्न: ब्रह्माकुमारीज़ में हम हर जगह ये लिखा पाते हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं, हम भी ये पढ़ते-पढ़ते, सुनते-सुनते थक गए हैं, लेकिन श्रीकृष्ण का कोई अता-पता नहीं, वे आएंगे भी या नहीं, या ये आपके प्रचार का ही साधन मात्र है?

उत्तर: ज्ञान सागर परमात्मा ने जब प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश किया तब सर्वप्रथम उन्हें ही स्थापना और विनाश का सम्पूर्ण साक्षात्कार करा दिया था और कहा था कि अब तुम गहन तपस्या करो और मेरा माध्यम बन जाओ। स्वयं भगवान ने ही ये महावाक्य उच्चारे थे कि आने वाले महाभारी महाभारत युद्ध द्वारा विनाश के बाद श्रीकृष्ण का इस धरा पर आगमन होगा और ये धरा स्वर्ग बन जायेगी।

श्रीकृष्ण तो जल्दी ही आना चाहते हैं, लेकिन लोग सच्चे मन से उनका आह्वान नहीं करते। इसका बड़ा गुह्य अर्थ है। विषय-वासनाओं में लिप्त आत्माओं के आह्वान पर वो देवात्मा नहीं आयेंगे। उनका आह्वान करने के लिए तो स्वयं को पावन बनाना होगा, देवत्व से सम्पन्न करना होगा। यही कारण है कि वो महान देवात्मा सभी के पवित्र होने का इंतज़ार कर रही है। दूसरी बात, उनका आगमन कलियुग की इस तमोप्रधान और पाप से भरी दुनिया में नहीं हो सकता। उनके लिए तो प्रकृति और मनुष्य दोनों का सम्पूर्ण पवित्र होना आवश्यक है।

तो जल्दी-जल्दी आप भी पवित्र बन जाइये और इस तरह जब अनेक मनुष्यात्मायें पवित्र बन जायेंगी तो इस कलियुगी सृष्टि का विनाश हो जायेगा और ये संसार देवताओं के आगमन के लिए तैयार हो जायेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब शीघ्र ही आपके इंतज़ार की घड़ियां समाप्त हो जायेंगी और जल्दी ही श्रीकृष्ण इस धरा पर आ जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA SKY 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E